करोड़पति बनने को ललचाता दिवालिया महानायक

ए.बी.सी.एल. (अमिताभ बच्चन कारपोरेशन लिमिटेड) का दिवाला पिटने के बाद अपने डूबते मनोरंजन कारोबार को बचाने का नुस्खा बीते जमाने के सुपर स्टार को आखिर मिल ही गया। स्टार टी.वी. चैनल पर अमिताभ बच्चन की 'एंकरशिप' में विगत 3 जुलाई से चल रहा सीरियल 'कौन बनेगा करोड़पति' (के.बी.सी.) सुपर हिट हो गया है और पुरस्कार आधारित सीरियलों के सारे कीर्तिमानों को ध्वस्त कर रहा है। मीडिया विशेषज्ञों का आकलन है कि दो दुखियारों (अमिताभ और स्टार टीवी चैनल) के मिलन से पैदा हुए के.बी.सी. कार्यक्रम से दोनों के गर्दिश के दिन दूर हो जायेंगे।

1996 में बंगलोर में मिस वर्ल्ड स्पर्द्धा के आयोजन, बैंडिट क्वीन, बाम्बे, सजा-ए-काला पानी के वितरण और तेरे मेरे सपने, नाम क्या है? और मेजर साब जैसी फिल्मों के निर्माण से जुड़ी ए.बी.सी.एल. कम्पनी 70 करोड़ रुपये से अधिक के घाटे में चली गयी थी। दूरदर्शन का भी ए.बी.सी.एल. पर 17.65 करोड़ रुपये का बकाया हो चुका था। इस झटके से उबरने में 'बिग बी' ने सत्ता के गलियारों में अपनी पहुंच का भरपूर फायदा उठाया। ए.बी.सी.एल. को बीमार घोषित करवाकर' बायफर' (बोर्ड ऑफ इण्डस्ट्रियल एण्ड फायनेंशियल रिकन्सट्रक्शन) के हवाले कर अपनी डूबती कश्ती को बचाने की कोशिश के साथ ही दूरदर्शन से भी यह समझौत करवाने में अमिताभ ने सफलता हासिल कर ली थी कि उसके कर्जे कम्पनी किश्तों में चुका दे। फिर भी केनरा बैंक और इलाहाबाद बैंक के भारी कर्जे अभी बाकी थे। इलाहाबाद बैंक ने तो अमिताभ के प्रिय बंगले 'प्रतीक्षा' और दो अन्य बंगलों पर अदालत की मदद से रिसीवर तक बैठा रखा है। इन दुश्वारियों में डूबती-उतराती अमिताभ की कश्ती को आखिर पतवार मिल ही गयी। 130 एपिसोड की के.बी.सी. की एक श्रृंखला के लिए अमिताभ बच्चन फिलहाल 15 करोड़ रुपये कमा चुके हैं। जाहिर है सीरियल की सफलता से टीवी पर्दे पर अमिताभ का बाजार भाव काफी चढ़ चुका है और नये-नये आफरों की झड़ी लग जायेगी।

उधर 'स्टार' चैनल को भी अपनी मन्दी के दिनों से उबरने के लिए जरूरी 'किक' मिल गयी है। टीवी चैनल युद्ध में सबसे आगे रहा स्टार चैनल पिछले दो-तीन वर्षों में खिसककर तीसरे स्थान पर पहुंच गया था। विज्ञापनों से कमाई के मामले में 'सोनी' और 'जी' स्टार से काफी आगे निकल चुके थे। ऐसे में के.बी.सी. की सफलता ने 'स्टार' के फिर से अच्छे दिनों का रास्ता खोल दिया है। कार्यक्रम को प्रायोजित करने के लिए बजाज, एल.जी., डिटॉल, कॉलगेट जैसे बड़े निर्माताओं से विज्ञापन के एवज में 'स्टार' 30 करोड़ रुपये की कमाई कर चुका है। कार्यक्रम की सफलता के बाद 'स्टार' ने पहले से ही बढ़ी विज्ञापन दरों को और बढ़ाने का फैसला कर लिया है। एक अनुमान के अनुसार इस कार्यक्रम से 'स्टार' कुल 175 करोड़ रुपये की कमाई करेगा जबकि सेट तैयार करने, अमिताभ बच्चन की मजदूरी देने, प्रचार-प्रसार एवं अन्य विविध तकनीकी खर्चों को मिलाकर सिर्फ 75 करोड़ रुपये खर्च होंगे। जाहिर है, अमिताभ को लेकर खेला गया जुआ स्टार के लिए लकी साबित हो गया है। अमिताभ का जादू दर्शकों पर एक बार फिर चल गया है।

आखिर जादू क्यों नहीं चलता? कार्यक्रम के निर्माता-निर्देशकों की बाजारू सूझ-बूझ को दाद देनी होगी। उन्होंने काफी सटीक अनुमान कर लिया कि जिस तरह अपने पहले अवतार के दौरान अमिताभ ने समाज के दबे-कुचले लोगों की दबी हसरतों को 'महानायक' बनकर बड़े पर्दे पर अकेले ही पूरा कर डालने में कामयाबी हासिल की थी, छोटे पर्दे पर भी किसी न किसी रूप में उसे दुहराया जा सकता है। सो, उन्होंने फार्मूला ढूंढ़ निकाला। बिना हर्रे-फिटकरी के करोड़पति कौन नहीं बनना चाहेगा आजकल? चाहे दफ्तर के चपरासी-बाबू हों या मुख्य कार्यकारी अधिकारी—पैसे की माया के फेर में कौन नहीं पड़ना चाहेगा? इसलिए, प्रतियोगिता की आरम्भिक मंजिलों में सवाल ऐसे रखे गये, जिसका जवाब थोड़ा-बहुत सामान्य ज्ञान रखने वाला भी आसानी से दे दे। आखिरी सीढ़ी पर पहुंचकर करोड़पति चाहे न बन पाये, लखपति और हजारपति तो बन ही सकते हैं। इस लालसा में प्रतियोगिता में शामिल होने के इच्छुकों से फोन की घण्टियां अविराम-अहर्निश घनघना रही हैं। रूपर्ट मर्डोक और अमिताभ बच्चन के साथ फोन कम्पनियां भी मालामाल हो रही हैं।

धन्य है पूंजी का खेल। करोड़पति-लखपति-हजारपति बनने की चाह रखने वालों की आत्मा में पूंजीवाद का यह नारा जरूर गूंज रहा होगा—लालच जिन्दाबाद। प्रतियोगिता में शामिल बहुतेरे लोग हो सकता है कि फूटी कौड़ी भी न पायें। लेकिन क्या हुआ? और कुछ नहीं तो अपने दूसरे अवतार में 'बिग बी' का दरस-परस और छूना-छाना तो हो जायेगा। मर्त्यलोक में आना धन्य हो जायेगा। जो प्रतियोगिता में नहीं शामिल हैं, उनका भी सौभाग्य क्या कम है कि वे हफ्ते में चार दिन पूरे-पूरे पचास मिनट (मुए विज्ञापन दस मिनट खा जाते हैं) तक 'बिग बी' का दर्शन-सुख हासिल कर रहे हैं। साक्षात न सही, दूरदर्शन पर ही सही।

● मुक्तिबोध मंच, पन्तनगर

गुर्दों की खेती

दिसम्बर 1997 में तेलंगाना के किसानों ने कपास की फसल में 'बॉलवॉर्म' के भीषण प्रकोप से तंग आकर, उन कीटों पर बेअसर रहे कीटनाशकों का सेवन कर अपनी जिन्दगी को समाप्त करने की राह पकड़ी थी। तब इस मुद्दे पर तत्कालीन व्यवस्था के पुर्जों ने तमाम फौरी तथा धूर्ततापूर्ण कारण सुझाने शुरू कर दिये थे। आज भी किसानों की आत्महत्याओं का दौर थमा नहीं है। फसल खराब होने, कर्जे की अदायगी में असफलता, सम्पत्तिहीनता की वजह से सामाजिक प्रतिष्ठा में ह्रास आदि कारणों से दिसम्बर 19997 में आन्ध्र प्रदेश से शुरू हुआ किसानों की आत्महत्याओं का सिलसिला कनार्टक, महाराष्ट्र, पंजाब, उत्तर प्रदेश हर जगह फैल चुका है। इन आत्महत्याओं के आर्थिक और सामाजिक पहलुओं की पड़ताल करने वाले जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय शोधकर्ताओं का एक समूह यह साफ तौर पर मानता है कि इनकी मुख्य वजहें मुद्रास्फीति तथा आर्थिक उदारीकरण हैं। इसी सन्दर्भ में बात करते हुए समाजशास्त्री आशीष नन्दी कहते हैं : "अब किसान संगठित होकर रैलियां और धरने नहीं करते हैं बल्कि वे चुपचाप आत्महत्या कर लेते हैं।"

गौरतलब है कि इन आत्म हत्याओं के दौरान ही न केवल आन्ध्र प्रदेश में विधान सभा चुनाव